RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper

लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली में मिडिया की भूमिकाः सामान्य अवलोकन

डॉ. सतीश कुमार मीणा
(शोधार्थी)

शोध सारांशः–
शासन निर्णय लेने की प्रक्रिया है तथा वह प्रक्रिया जिससे क्रियान्वित होते है। शासन यह वर्णित करता है कि किसी प्रकार सार्वजनिक कार्यों का लोक संस्थाये निर्वाह करती है और सार्वजनिक साधनों का प्रबंधन करती है। अतः शासन में कार्यपालिका, विधान मण्डल और न्यायपालिका ही नहीं अपितु बाजार, समाज, मीडिया, गैर– सरकारी संगठन और आम लोग के सहयोग और भागीदारिता भी आवश्यक है। आज के ज्ञान समाज में सूचना और प्रोद्योगिकी के युग में मीडिया प्रशासन में एक प्राथमिक भूमिका निभाता है। मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ कहा गया है। सुशासन की कुछ महत्वपूर्ण विशेषतायें है जैसे वैद्यता, सहभागिता, जवाबदेही और पारदर्शिता।

संकेताक्षर :– लोकतंत्र, मीडिया, प्रोद्योगिकी, अवैयक्तिक, संप्रेशन, वैद्यता, सहभागिता जवाबदेही।

प्रस्तावना :– आज के युग में मीडिया हमारे दैनिक जीवन की एक मुख्य भाग है। शासन में मीडिया की प्रत्यक्ष भूमिका नहीं है, परन्तु यह लोगों की राय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जनता की आवाज बनता है और सार्वजनिक संस्थाओं को सूचना उपलब्ध कराता है। वर्तमान समय में लोक मत के सृजन और दिशा देने में मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और इस कारण से समाज के प्रति मीडिया का दायित्व बढ़ गया है। अतः मीडिया की भूमिका और सुशासन के लिए इसके उपयोग का अध्ययन आवश्यक है।

मीडिया शब्द का उदभव 'मीडियम शब्द से हुआ है, जिसका अर्थ है माध्यम। मीडिया का उपयोग एक विशाल जन समूह तक पहुंचने के लिए किया जाता है। यह अवैयक्तिक संप्रेशन का माध्यम है, जोकि लिखित, विजयुल (दृष्टि) या सुनने अथवा इन सब का मिलाजुला स्वरूप हो सकता है। इसके तहत दर्शकों को सीधे तौर पर सूचना, संदेश या विचार भेजे जाते है। सरल शब्दों में 'मिडिया' शब्द का अर्थ है विशाल जन समुदाय के साथ सम्प्रेशण जोकि लिखित रूप में शब्दों द्वारा या देखने के माध्यम से किया जाता है। यह वह समूह है जो लोगों के साथ सूचना और समाचार सांझा करते है। टेलीविजन, रेडियो, समाचार पत्र, मैगजीन, विडियों ऑडियो, चलचित्र आदि मीडिया के उदाहरण है।

मीडिया की परिभाषा से ही यह स्पष्ट है कि यह सूचना प्रसारित करने का व्यवस्थित साधन है। इसके माध्यम से एक बढ़े जन समूह के साथ समय पर शीघ्र, कुशलता से पहुंचा जा सकता है। मीडिया की विशेषतायें हैः–[1]

- यह लाखों लोगों तक बहुत कम समय में पहुंच जाता है।
- अशिक्षित और नेत्रहीन लोगों के लिए ऑडिया मीडिया लाभप्रद है।
- बहुभाषी अशिक्षित समाज में वीज्युअल मीडिया बहुत प्रभावशाली है।
- यह कम लागत और प्रयोक्ता के लिए मैत्रिपूर्ण है, और
- मीडिया सम्प्रेशण का एक तरफा साधन है। आजकल संपादक को पत्र, जनमत सर्वेक्षण तथा स्वतंत्र संपादिकीय प्रचलन में है जो मीडिया को परस्पर संवादात्मक बनाता है, फिर भी यह संवाद अभी सीमित है।

मीडिया जीवन का एक अभिन्न अंग है। मीडिया का एक प्रमुख कार्य है, जनता में विभिन्न मुद्दों को लेकर विधि शासन के प्रति जागरूकता उत्पन्न कराना तथा लोगों की सूचना उपलब्ध कराना, चाहे वह कार्यकारी या प्रशासनिक कार्यवाही लेख आदि हो। अधिकांश लोगों को सरकार, समाज, सम–सामयिकी की जानकारी मीडिया से मिलती है। यह जागरूक जिम्मेदार और अवगत समाज के निर्माण में सहायक होता है। समाचार मीडिया प्रमुखतः तीन प्रकार का होता है : प्रिन्ट मीडिया, प्रसारण मीडिया तथा इन्टरनेट।

यह मीडिया का सबसे पुराना स्वरूप है। समाचार पत्र, मैगजीन, जर्नल, ब्रोशर, न्यूजलेटर, पुस्तक, पत्रक और पर्चो को सामुहिक रूप से प्रिन्ट मीडिया कहा जाता है। हम में से अधिकांश लोग अपना दिन समाचार पत्र के साथ प्रारम्भ करते है। अतः छपाई (प्रिंट) मीडिया बहुत महत्वपूर्ण है। प्रिंट मीडिया के नियमित पाठक कई मुद्दों पर सतर्क और अवगत रहते है। अन्य स्त्रोतों के मुकाबले प्रिंट मीडिया अधिक विस्तृत रिपोर्टिंग करता है। टी.वी. पर बहुत से समाचार, समाचार पत्र में छपे समाचार की अनुवर्ती कहानी होती है। यद्यपि यह कहा जा सकता है कि इलेक्ट्रोनिक और नयी मीडिया ने प्रिन्ट मीडिया का स्थान ले लिया है, परन्तु आज भी बहुत सारे दर्शक है जो समाचार पत्र का प्राथमिकता देते है।[2]

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved *ISSN:* 2349-7637 (Online)

इस संचार मीडिया में टेलीविजन, रेडिया और अन्य इलेक्ट्रोनिक मीडिया जैसे चलचित्र, सिडी और डीवीडी तथा नये यंत्र सम्मिलित है। 1950 में टेलिविजन के आविष्कार के पूर्व, रेडिया प्रसारण ही समाचार का प्रमुख स्त्रोत था। टेलीविजन के आने के बाद कम लोग रेडियों पर भरोसा अपने प्राथमिक समाचार संसाधन के रूप में है। स्थानीय समाचार स्टेशन के दर्शक बहुत होते है, क्योंकि वह स्थानीय मौसम, यातायात और अन्य घटनाओं की पूर्ण खबर प्रसारित करते है। भारत में आज भी रेडियों संचार का एक अहम भाग है। ग्रामीण क्षेत्र में प्राकृतिक आपदा के समय में चेतावनी देने हेतु यह माध्यम उपयोगी है। उस प्रकार से टेलीविजन भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसका प्रदर्शन प्रभावी होता है और आकर्षक दृश्य दिखाये जाते है।

तकनीकी विकास के कारण इन्टरनेट आ गया है, जो अधिक प्रभावी भी है और गति तीव्र है। इन्टरनेट में ऑडियो और विडियों दोनों ही होते है। मोबाईल फोन कम्प्यूटर और इन्टरनेट को नये युग के मीडिया की संज्ञा दी जाती है। इन्टरनेट ने जन संचार के लिए नये द्वार खोल दिये है–जैसे ई–मेल, वेब ब्लॉग आदि। यह समाचार मीडिया के क्षेत्र में परिवर्तन ला रहा है, क्योंकि अब लोग प्रिंट और संचार मीडिया के स्थान के बजाय, ऑन लाईन सूचना पर अधिक भरोसा करते है। इन्टरनेट अधिक इंटरैक्टिव होता है क्योंकि लोग वेब–पोर्टल, पोडकास्ट, समाचार समूह और फीड्स से ही अपना समाचार और सूचना आपने आवश्यकतानुसार प्राप्त करते है। दर्शक अपने विचार एवं टिप्पणियॉ ऑनलाईन देते है।

सुप्रशासन के अन्तर्गत बाजार और समाज की भागीदारिता होनी चाहिए और सरकार के साथ मिलकर विधि के नियम का क्रियान्वयन पारदर्शिता, जवाबदेही और मानव अधिकार को बढ़ावा देना चाहिए। इसमें जवाबदेह, पारदर्शी, उत्तरदायी, समान और समावेशी प्रशासन सम्मिलित है। मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ है, जिसका कार्य यही है कि वह यह सुनिश्चित करे की यह सारे मानदण्ड लगातार पूरे किये जा रहे है। मीडिया अपनी जांच और आलोचना से सुशासन नहीं सुनिश्चित कर सकता है, अपितु इसे आम लोगों में परिवर्तन का सूत्रपात करना होगा। मीडिया को जन मानस के उत्थान के लिए कार्य करना चाहिए न कि स्वयं के हितों के लिए। सुशासन में मीडिया समाज में भ्रष्टाचार में कमी, मानवाधिकार की रक्षा, किसी का क्रियान्वयन परिवर्तन तथा निर्णय प्रक्रिया में लोगों की सहभागीता सुनिश्चित करता है। मीडिया यह सुनिश्चित करता है कि शासन के कार्यो पर लगाम लगी रहे तथा जनता की आवाज सुनी जाये।

वर्तमान समय में शासन में मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण है क्योंकिः अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता हेतु एक पटल तैयार करता है, राज्य के अपने नागरिकों के लिए दायित्व पर जोर देता है और राज्य नागरिक संबंध में सुधार लाता है, संतुलित और विश्वसनीय सूचना उपलब्ध कराता है, जिससे समाज में चर्चा और संवाद को प्रोत्साहन मिलता है।

मीडिया के लिए लोकतन्त्र एक प्राथमिक आवश्यकता है और यह भी सच है कि मीडिया के बिना लोकतंत्र वैसे ही है जैसे चक्के बिना गाड़ी। लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका को थॉमस जैफरसन के कथन ने स्पष्ट किया है, ''यदि मुझे यह चुनाव दिया जाये की सरकार बिना समाचार पत्र अथवा समाचार पत्र बिना सरकार तो में निश्चित ही द्वितीय विकल्प का चुनाव करूंगा।''[3] मीडिया को लोकतत्र का चौथा स्तम्भ माना गया है। जनता में जागरूकता मीडिया द्वारा लाई जाती है, और सामाजिक परिवर्तन के लिए मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लोकतांत्रिक परिदृश्य में, मीडिया ही लोकतांत्रिक प्रक्रिया को मजबूती देता है और विकास की प्रक्रिया को रफ्तार प्रदान करता है।

नोरिस–2006 के अनुसार लोकतंत्र और सुशासन में मीडिया की तीन प्रमुख भूमिकायें है। पहला है सत्ताधारी पर लगाम रखना, जवाबदेही को बढ़ावा देना, पारदर्शिता और सार्वजनिक जांच, यह सब मीडिया के महत्वपूर्ण कार्य है। मीडिया का दूसरा प्रमुख कार्य है राजनीतिक बहस के लिए नागरिक मंच उपलब्ध कराना, सूचित चुनावी विकल्प और कार्यों को सुविधाजनक बनाना और तीसरा कार्य है नीति निर्माताओं के लिए विषय उपलब्ध कराने हेतु सामाजिक समस्याओं के लिए सरकार की जवाबदेही को बढ़ाना।

लोकतंत्र में जनता की सहभागिता आवश्यक है। मीडिया जनता को सरकार के कार्यक्रमों और कार्यों की जानकारी देकर तथा उन्हें संगठित कर शासन का भाग बनाये रखता है। लोकतंत्र तभी सही रूप में कार्य कर सकता है जब उसमें जनता की सहभागिता अधिकतम होगी। जनता को मुद्दों की जानकारी देना, शासन में वर्तमान में क्या चल रहा है, इसकी जानकारी तथा सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों को लकर सजग होना ही उनकी सहभागिता को बढ़ावा है। यह जानकारी जनता तक मीडिया ही पहुंचाता है। इस जानकारी से लोग शासन की प्रशंसा या आलोचना कर सकते है और नीतियों के समर्थन का विरोध करते है। मीडिया, सम्प्रेशण का भी एक साधन है, जिसके द्वारा जनता आवाज उठाती है, अपनी चिंताओं और अपनी समस्या, सरकार तक पहुंचाती है। कई बार यह देखा गया है कि जनता द्वारा उठाई गई आवाज के कारण सरकार ने दबाव में आकर अपनी नीति संशोधित या परिवर्तित की है। इस प्रकार से मीडिया सुशासन हेतु आधार बनाता है। उदाहरण के लिए भारत में अन्ना हजारे द्वारा लोकपाल बिल के लिए किये गये आंदोलन को मीडिया ने सर्मथन दिया था। इस समाचार और कवरेज ने देश की सम्पूर्ण जनता को भ्रष्टाचार के खिलाफ एक कर दिया और सरकार पर लोकपाल बिल को संसद में पेश करने हेतु दबाव बना। हाल ही में जब सेनिटरी पेड पर जी एस टी लगाया गया तो महिलाओं ने इसका विरोध विभिन्न मीडिया के माध्यम से किया। लगातार यह देखने को मिल रहा है कि विभिन्न मुद्दों पर जनता आंदोलित हो रही है। अतः मीडिया की भूमिका और गंभीर हो गयी है।[4]

मीडिया प्रत्येक नागरिक को आवाज देता है और साथ ही ऐसे वातावरण तैयार करने में सहयोग देता है, जहां निर्णय प्रक्रिया में ये आवाज सुनी जा सके। लोकतान्त्रिक प्रणाली में जो कमियॉ है, वह भी मीडिया उजागर करता है और सरकार को इन कमियों को दूर

करने में सहयोग करता है तथा शासन प्रणाली इस कारण से अधिक जवाबदेह, उत्तरदायी बनाता है। स्वस्थ्य लोकतंत्र को बनाने में मीडिया एक अहम भूमिका निभाता है।

मीडिया का काम शिक्षा प्रदान करना भी है और वह यह काम चर्चा के द्वारा राजनीतिक शिक्षा पर टिप्पणी देकर लोकतांत्रिक संस्कृति को बढ़ावा देता है। राजनीतिक वैज्ञानिक कार्ल ड्यूश ने संप्रेशण प्रणाली को राजनीति की तंत्रिका बताया है और किसी भी तंत्रिका में गड़बड़ी होने से राजनीति के कार्य पर प्रभाव पड़ता है और शासन का क्षय होता है। अनभिज्ञ या अज्ञानी जनता को बड़े पैमाने पर शिक्षित करना कठिन है। यह कार्य केवल मीडिया द्वारा सफलता पूर्वक किया जा सकता है। मीडिया के प्रसार से लोगों के बीच मुद्दों को लेकर चर्चा प्रारम्भ होती है तथा उन्हें सही निर्णय लेने में सहायक होता है। जागरूक और अवगत नागरिक निर्णय की प्रक्रिया में अधिक सक्रिय रूप से भाग लेते है।[5]

नागरिकों का राजनीति, सरकारी कार्य, सामाजिक मुद्दों आदि पर राय ही लोकमत है। किसी भी शासन तथा लोकतांत्रिक प्रणाली के लिए यह आवश्यक है कि वह लोगों की राय को समझे और अपनाये, क्योकि नागरिकों के राजनीतिक निर्णय और कार्यवाही उनके मत से प्रभावित होते है। मीडिया शासन और राजनीति व्यवस्था को समझने में नागरिकों की मदद करता है। लोकमत नीति के स्पष्ट परिणाम भी दर्शाता है। यह सरकार के लिए अपने कार्य, नीति पर प्रतिक्रिया उपलब्ध कराता है। अतः लोकतान्त्रिक प्रणाली में शासन को नागरिकों की महत्वाकांक्षा, इच्छा, आवश्यकता और शिकायतों की जानकारी लोकमत से ही प्राप्त होती है।

मीडिया न केवल नागरिकों को अपितु नीति निर्माताओं को भी विभिन्न मुद्दों पर सूचना उपलब्ध कराता है। मीडिया सर्वप्रथम किसी विषय पर ध्यान आकर्षित करवाता है और फिर उस पर तथ्य, सूचना और विषय विशेषज्ञ के विचार उपलब्ध करवाता है। यह जनता को शसन और सुधार पर अपनी राय देने हेतु सक्षम बनाता है और परिवर्तन हेतु एक राय बनाने में सहायक होता है। अन्ततः मीडिया यह सूचना नीति निर्माताओं तक पहुंचाते है, ताकि वे समस्याओं के समाधान को नीति में सम्मिलित कर सके। सरकारी नीतियों में कमियों को मीडिया द्वारा सामने लाया जाता है और सरकार के कार्यों पर नजर रखी जाती है।

मीडिया एक और कार्य जो मुख्य रूप से निभाता है वह है महत्वपूर्ण मुद्दों पर जनमत को सामने लाना। यह अधिक से अधिक व्यक्तियों को अपनी राय पेश करने का अवसर प्रदान करता है। साथ ही मीडिया इन मुद्दों को महत्वपूर्ण बनाने हेतु जमीनी स्तर पर जन सहमती तैयार करता है। मीडिया केवल सूचना ही नहीं देता अन्यथा जनमत को गति भी देता है। यह सूचना की व्याख्या कर, सूचना को सही रूप में संगठित कर एक ठोस विचार धारा में परिवर्तित करता है और नागरिकों को अपनी राय देने के लिए गति प्रदान करता है। देश में चुनाव के समय यह देखने को मिलता है।[6]

जनता की जागरूकता बढ़ाने के लिए मीडिया द्वारा प्रसारित विधान संबंधी बहस, प्रख्यात लोगों के भाषण, जन समस्या और वर्तमान मुद्दों की जानकारी से बहुत मदद मिलती है। यह समाचार और विचार, जनता में राजनीतिक और सामाजिक जागरूकता बढ़ाता है, जो जन मत निर्माण में सहायक होता है। हम चुनाव से पहले और बाद के मीडिया की भूमिका से अवगत है, जो मुद्दों पर लोकमत बनाने में मुख्य है।

प्रशासनिक अधिकार के गलत प्रयोग को मीडिया रोकता है। मीडिया लगातार शासन के कार्य और नीतियों पर नजर रखता है, ताकि जवाबदेही बनी रहे तथा उनके दायित्वों के निर्वाहन में गंभीरता बनी रहें। मीडिया के रिपोर्ट के कारण सरकार के मनमाने अधिकार के उपयोग पर अंकुश लगता है तथा यह सुनिश्चित करता है है कि सरकार के कार्यों में पारदर्शिता बनी रहे।

विश्व बैंक के अनुसार मीडिया भ्रष्टाचार के मुद्दों को उठाकर उसे जनता के सामने लाते है और चर्चा के लिए सुविधा प्रदान करता है। साथ ही भ्रष्टाचार के विरूद्ध लोकमत बनाने में सहायक होता है। वर्तमान समय में नौकरशाही के अधिकार कार्यों में वृद्धि हुई है। अतः इसके मनमाने उपयोग पर अंकुश लगाना आवश्यक है। लोक प्रशासन में पारदर्शिता से सरकार और व्यक्तियों के बीच हितों के मतभेद की जानकारी सामने आती है तथा सरकार के कार्यों को वैधता प्रदान करता है। मीडिया की अनुसंधान रिपोर्ट इन हितों के मतभेद के समाचार को सामने लाता है। यह सुनिश्चित करता है कि सरकार की नीतियों का सही रूप से क्रियान्वित किया जा रहा है तथा सरकार जनता के हितों की रक्षा कर रही है न कि समाज के किसी एक भाग की।

मीडिया में परिवर्तन लाने की क्षमता है। अपनी पहुंच के कारण मीडिया ने देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसका तात्पर्य है कि जहां आवश्यक है वहां पुरानी प्रथाओं और संरचनाओं को परिवर्तित कर, नई प्रणाली और व्यवस्था को अपनाया जाता है। फूड एण्ड एग्रीकल्चर ऑर्गेनाइजेशन की रिपोर्ट के अनुसार ''विकास और सम्प्रेषण अव्यवस्थित हुआ है। एक तरफ मीडिया का उपयोग विकास के लिए नहीं किया जा रहा है। दूसरी तरफ विकास के कार्य हो रहे हैं जहां मीडिया रिपोर्ट नहीं है। आदर्श दुनिया में दोनों एक साथ ही चलते है।''[7]

मीडिया में लोगों के मन स्थिति और विचार परिवर्तित करने की क्षमता है। यह विभिन्न सामाजिक मुद्दों को उठाते है और लोगों की राय को प्रभावित करते है। यह लोगों को उनके अधिकार और दायित्व की जानकारी देते है। भारत जैसे देश में जहां गरीबी और निरक्षरता अधिक है, मीडिया लोगों के व्यवहार को प्रभावित करते है। ऐसे कई उदाहरण है जहां मीडिया ने सामाजिक बुराइयों पर लोगों को जागरूक किया और समाज की सोच में परिवर्तन लाए है। पोलियों के खिलाफ मीडिया द्वरा जागरूकता फैलाई गयी और 'दो बूंद जिन्दगी के' जैसा अभियान प्रभावी रहा जो टीवी और रेडियों में प्रसारित किया गया। मीडिया के इस अभियान ने भारत को आज पोलियों मुक्त होने में मदद की। एचआईवी एड्स के संबंध में भी मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। समय–समय पर मीडिया, महिलाओं के मुद्दें और समस्यायें उठाती रहती है जैसे घरेलू हिंसा, दहेज, यौन उत्पीड़न और समाज में महिलाओं के

सम्मानजनक जीवन यापन की बात उठाती है। हम जानते है कि मीडिया ने अंग दान पर जागरूकता पैदा की है। यह अभियान समाज में गति पा रहा है और लोगों की संवेदनशीलता बढ़ रही है। समाज में परिवर्तन लाने में मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

मीडिया स्वयं से कोई आंदोलन आरम्भ नहीं करता, अपितु सरकार की योजना नीति और कार्यक्रम की जानकारी देता है। आम जनता में समाज, आर्थिक मुद्दे और पर्यावरण, मीडिया पर जागरूकता पैदा करता है। जब लोगों को सरकार कार्यक्रमों की जानकारी मिलती है, तो वे इन योजनाओं का भरपूर लाभ ले पाते है। इससे मीडिया न केवल सामाजिक परिवर्तन लाने में सरकारी कार्यक्रमों की सफलताओं को जनता के सामने लाता है, परन्तु इन योजनाओं और कार्यक्रमों की कमियों को भी सामने लाता है। सरकार इस कारण से विकास और परिवर्तन के लिए प्रत्यनशील रहती है। नये विचार और कार्यों के प्रसार में मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में रेडियों और टीवी विकास कार्यक्रमों और योजनाओं को लोगों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है।

मानवाधिकारों की सार्वभोम घोषणा में यह स्पष्ट रूप से कहां गया है कि सभी मनुष्यों को जन्म से ही कुछ मूलभूत निहित, अपरिहार्य और अभेदय अधिकार प्राप्त है। इन अधिकारों को नागरिकों को देना और इसकी रक्षा करना ही प्रजातंत्र का मूल है। मानवाधिकारों को प्रदान करना, सुरक्षित रखना और बढ़ावा देने में मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण है। मीडिया मानवाधिकार के संबंध में जागरूकता पैदा करती है और अनुकूल वातावरण बनाने में सहायक होती है। कुछ मानवाधिकार जो मानव विकास के लिए आवश्यक है जैसे समानता का अधिकार, बोलने की स्वतंत्रता, शांति का अधिकार, गरिमापूर्ण जीवन का अधिकार, आदि मीडिया के सामान्य ऐजेण्डा में होना चाहिए और उनके द्वारा सर्वोच्य प्राथमिकता दी जानी चाहिए। मीडिया को मानवाधिकार का वातावरण बनाना होगा, जिससे समाज के सभी भागों को शामिल किया जा सके।[8]

मानवाधिकार के हनन की घटनाओं को मीडिया द्वरा महत्व दिया जाना चाहिए। इन घटनाओं की रिपोर्ट की जानी चाहिए और मीडिया द्वारा इसकी छान–बीन भी की जानी चाहिए। मानवाधिकार के सुरक्षा संबंधी कमियों और चुनौतियों की चर्चा और साथ ही उन व्यक्तियों के और संगठनों की, जो मानवाधिकार को सुरक्षित रखने का प्रयास कर रहे है, उनकी सफल कहानियॉ भी मीडिया द्वारा प्रकाशित की जानी चाहिए। मीडिया मानव अधिकारों पर मनमाने ढंग से शक्ति के उपयोग का विरोध कर सकता है। चूंकि मीडिया सरकार और जनता के बीच संवाद के सेतु के रूप में काम करता है, इसलिए वह अधिकारियों को उनके दायित्व भी समय–समय पर याद दिला सकता है। नागरिकों में जागरूकता पैदा करने का काम मीडिया करता है तथा शासन, समाज और संगठनों के लिए सूचना का स्त्रोत भी बन जाता है।

मीडिया की चुनौतियॉ– मीडिया अपने प्रमुख संकेतों को बढ़ावा देकर सुशासन के लिए उत्प्रेरक का काम करता है। यह सुशासन के लिए सही वातावरण तैयार करता है, प्रोत्साहन देता है, रक्षा और प्रसारित करता है। इस कार्य को करने हेतु यह आवश्यक है कि मीडिया सच्ची, निष्पक्ष और स्वतंत्र हो। परन्तु यदि मीडिया पक्षपाती है भ्रष्ट है और किसी दल या व्यक्ति विशेष को ही महत्व देता है, तो लोकतंत्र के लिए यह खतरा है। वहीं यदि कोई दल या व्यवसाय मीडिया पर हावी हो जाये तो मीडिया की विश्वसनीयता खतरे में पड़ जाती है। पेड न्यूज स्वतंत्र और निष्पक्ष मीडिया के लिए खतरा है और एक निरोग लोकतंत्र को बनाये रखने हेतु इसे रोका जाना चाहिए।[9]

- राजनीतिक दल, मीडिया और कॉर्पोरेट संस्थाओं के बीच गठजोड़ होने सुशासन में बाधा आ रही है। कई बार यह होता है कि मीडिया सच्चाई को न दिखाते हुए कुछ लोगों के हितों में ध्यान रखते हुए सूचना प्रसारित करता है। जन भागीदारिता को प्रोत्साहन नहीं दिया जाता है। शासन की जवाबदेही को कम करके आंका जाता है और भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया जाता है। इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि मीडिया स्वतंत्र और गैर पक्षपाती हो ताकि लोकतंत्र अभिजात वर्गीय में न परिवर्तित हो जाये।
- यह भी आवश्यक है कि मीडिया के अधिकारों पर भी नियन्त्रण रहे। मीडिया द्वारा अपने अधिकारों का गलत प्रयोग भी देखने को मिलता है। उसे अपने सीमाओं का उल्लंघन नहीं करना चाहिए और सरकार की अन्य तीन शाखाओं के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। तभी मीडिया सुशासन का जरिया बन सकता है।
- मीडिया को उन मुद्दों को लेकर संवेदनशील होना चाहिए जो विकास के कारक है।
- जागरूक नागरिक बनाने में तकनीक और मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- मीडिया को पेशेवर बनाना, स्वतंत्रता तथा नैतिकता को महत्व देना, जवाबदेही को बढ़ाना, शासन और मालिकों के हस्तक्षेप को समाप्त करना और मीडिया की पहुंच का लोकतान्त्रीकरण, मीडिया की स्वतंत्रता को सुनिश्चित करना और सुशासन हेतु इसे बनाये रखना।

निष्कर्ष– मीडिया की भूमिका जिसमें सामाजिक मीडिया सम्मिलित है को वर्तमान समय में स्वीकृत किया जा रहा है। इसके लिए यह आवश्यक है कि लोगों को सूचना दी जाये तथा उन्हें प्रशासनिक प्रक्रिया में भागीदार बनाया जाये। अतः यह भी स्पष्ट किया गया है

कि किस प्रकार मीडिया महत्वपूर्ण है और उसकी भूमिका बहूआयामी है। एक संवेदनशील, जवाबदेही, जिम्मेदार और पेशेवर मीडिया सुशासन में सहायक रहता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डिरोच, एडवर्ड एफ, 'मास इण्डिया जन संचार और कक्षाकक्ष में शिक्षक' 1968, पृ. 110
2. लक्ष्मेन्द्र चौपड़ा, जनसंचार का समाजशास्त्र, आधार प्रकाशन, 2002, पृ. 145
3. वहीं, पृ. 170
4. नवभारत निर्मिती क्रांतिकारी डॉ. अम्बेडकर पत्रकारिता का योगदान, प्रो. आम्बुलकर डी.डी.पी.एच.डी. स्कॉलर–बाबा साहेब योगदान, 2012, पृ. 139
5. चेनना भाटिया, प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रोनिक मीडिया, अनुराग प्रकाशन नई दिल्ली, 2006, पृ. 147
6. चंद्रकांत सरदाना, कृ.शि. मेहता, जनसंचार कल आज और कल, ज्ञान गंगा प्रकाशन, 2009, पृ. 166
7. पी.के. आर्य, इलेक्ट्रोनिक मीडिया, प्रतिभा प्रतिष्ठान प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृ. 127
8. वहीं, पृ. 174
9. नवभारत निर्मिती क्रांतिकारी डॉ. अम्बेडकर पत्रकारिता का योगदान, प्रो. आम्बुलकर डी.डी.पी.एच.डी. स्कॉलर–बाबा साहेब योगदान, 2012, पृ. 130

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)